शुक्रवार व्रत कथा PDF

किंवदंती के अनुसार, एक बूढ़ी औरत थी जिसके सात बेटे थे, जिनमें से छह मेहनती और मेहनती थे, लेकिन एक आलसी और आलसी था। जब वह बुढ़िया खाना पकाती थी तो छः उनके पेट में भर देती थी और बाद में उनका बचा हुआ खाना आखिरी के सबसे छोटे बेटे को दे देती थी। एक दिन उस छोटे बेटे ने अपनी पत्नी से कहा कि मेरी माँ मुझे बहुत प्यार करती है। इस पर पत्नी ने कहा कि हां! झूठा खाना देकर वह तुम्हें बहुत प्यार करती है। बुढ़िया का बेटा इस बात से अनजान था।

अपनी पत्नी की बात की सच्चाई जानने के लिए एक दिन त्योहार के दिन उसने तबीयत खराब होने का बहाना बनाकर मुंह पर कपड़ा बांधकर रसोई में छिप गया। उसके अलावा छह भाई रसोई में खाना खाने आए। उनकी माता ने सभी भाइयों को प्रेमपूर्वक भोजन कराया। सब लोगों के खा लेने के बाद माँ ने छः भाइयों की थाली में बचा हुआ खाना इकट्ठा करके छोटे बेटे को परोस दिया।

यह देखकर बेटा बहुत दुखी हुआ। उसने मां से कहा कि तुम अब तक मुझे झूठा खाना खिलाती थीं। मैं यह खाना नहीं खाऊंगा। मैं घर छोड़ रहा हूँ। इस बात पर मां ने भी गुस्से में कहा कि जाना है तो जाओ, मैं नहीं रुकूंगी। मां की बात सुनकर उसने कहा कि ठीक है, चलता हूं, अब कुछ बनकर घर लौटूंगा। इतने में उसे अपनी पत्नी की याद आ गई, वह अपनी पत्नी से कहता है कि मैं कुछ देर के लिए बाहर जा रहा हूं। आप मुझे अपने टोकन के रूप में कुछ दें। पत्नी कहती है मेरे पास आपको देने के लिए कुछ नहीं है। फिर वह अपने हाथ में गाय के गोबर से उसकी कमीज पर निशान बनाती है और कहती है कि यह मेरी निशानी है। फिर वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ता है।

वह काम की तलाश में दूर देश चला गया। वहां उसने एक बड़े सेठ व्यापारी की दुकान पर काम करने को कहा। उस समय सेठ को भी एक लड़के की जरूरत थी तो सेठ ने उस लड़के को रख लिया। देखते ही देखते बुढ़िया का छोटा बेटा दुकान का सारा लेन-देन सीख गया। उसकी चतुराई और बुद्धिमत्ता की तारीफ करते रहें। सेठ ने उसका ज्ञान बढ़ता देख उसे अपनी साझेदारी में भागीदार बना लिया और वह एक बड़ा व्यापारी बन गया। सेठ अपना सारा कारोबार उस पर छोड़कर दूसरे देश चला गया, लेकिन उसकी पीठ पीछे उसकी पत्नी के साथ उसकी मां और परिवार के अन्य सदस्यों ने बहुत बुरा व्यवहार किया। खाना-पीना भी ठीक से नहीं दिया जाता।

pdfinbox.com

उनकी पत्नी को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था। एक दिन जब वह जंगल से लकड़ी इकट्ठा कर घर आ रही थी तो उसने रास्ते में कुछ महिलाओं को मंदिर में पूजा करते देखा। उन्होंने वहां मौजूद महिलाओं से व्रत का महत्व और विधि–विधान के बारे में पूछा। इस पर उस समूह की एक महिला ने कहा, "हम सब यहां संतोषी माता का व्रत और पूजन कर रहे हैं. यह व्रत सभी विपत्तियों और कठिनाइयों का नाश करता है। व्रत की विधि बताते हुए महिलाओं ने कहा, 'यह व्रत शुक्रवार को स्नान आदि के बाद एक लोटे में शुद्ध जल लेकर गुड़ और चने का प्रसाद लेकर शुरू किया जाता है. खटास से बचा जाता है। एक समय का भोजन परोसा जाता है और साथ ही संतोषी माता की भक्ति के साथ पूजा की जाती है।

यह विधि सुनकर वह संयम से प्रत्येक शुक्रवार को संतोषी माता का व्रत करने लगी। संतोषी माता उसके व्रती विश्वास से प्रसन्न हुई। कुछ ही दिनों में उसके पति का पत्र और पैसे आ जाते हैं। यह देखकर बहू का विश्वास और मजबूत हो जाता है। वह निश्चय करती है कि जब उसका पति घर लौटेगा तो वह व्रत का पारण करेगी। संतोषी माता यह निश्चय करके अपने पति को स्वप्न में घर चलने को कहती है, जिस पर वह कहता है कि सेठ का माल अभी तक नहीं बिका और पैसे नहीं मिले, मैं अब घर नहीं जा सकता।

अगले दिन उसने सेठ को सारी बात बताई। कुछ ही दिनों में सेठ का सारा सामान बिक जाता है और उसका जो पैसा रुका हुआ था वह भी उसको वापस मिल जाता है और फिर वह घर वापस आता है पति के वापस आने पर बहू माता संतोषी का व्रत रखने को राजी हो जाती है। उसकी पड़ोसन की एक औरत उसकी खुशी देखकर जलती है और अपने बच्चों को सिखाती है कि जब खाने बैठो तो खट्टा जरूर मांगना। उद्यापन के दिन ऐसा होता है कि उसके बच्चे खट्टा मांगते हैं, लेकिन बहू उन्हें पैसे देकर उन्हें बहलाती है। वो बच्चे उसी पैसे से अगले दिन अचार खरीद कर खाते हैं. इससे उसकी खेती खराब हो जाती है।

सेठ उसके पति को वापस बुलाने लगता है। दुख फिर से अपनी जगह बनाने लगता है। ऐसे में वह मां संतोषी का ध्यान करती हैं। तभी एक महिला उसे बताती है कि उस महिला के बच्चे ने उस दिन खट्टा खाया था। यह सुनकर बहू एक बार फिर से उद्यापन करने का संकल्प लेती है। इसके बाद वह पूरी श्रद्धा से संतोषी माता की पूजा करती हैं। माता की कृपा से उन्हें एक पुत्र हुआ है। अब वह उसका पति है और उसकी सास खुशी–खुशी साथ रहती हैं।

हे संतोषी माता जिस प्रकार आपने उस परिवार का कल्याण किया उसी प्रकार अपनी कृपा छाया हमारे परिवार पर भी बनाए रखना।

pdfinbox.com

बोलिए संतोषी माता की जय।

pdfinbox.com

pdfinbox.com